संज्ञा और संज्ञा के विकारक तत्व

संज्ञा और संज्ञा के प्रकार

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, गुण अथवा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं; जैसे -

व्यक्ति - हरीश, राम, गीता आदि।

स्थान - दिल्ली, जयपुर, ओखला आदि।

वस्तु - सेब, मेज, पुस्तक आदि।

गुण - ईमानदारी, बुरा, कठोर।

भाव - बुढ़ापा, मित्रता, मिठास।

संज्ञा तीन प्रकार के होते हैं -

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा

2. जातिवाचक संज्ञा

3. भाववाचक संज्ञा

1. <u>व्यक्तिवाचक संज्ञा</u> :- किसी विशेष व्यक्ति, स्थान अथवा वस्तु के नाम को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे - राम, श्याम, मोहन, दिल्ली, भारत आदि। यहाँ राम, श्याम तथा मोहन - व्यक्ति के नाम हैं, दिल्ली तथा भारत - स्थान के नाम हैं और शेर - पशु को सम्बोधित करता है, इसीलिए ये व्यक्तिवाचक संज्ञा हैं। इसी प्रकार फल, विभिन्न नदियों तथा पहाड़ों के नाम भी व्यक्तिवाचक संज्ञा ही हैं।

2. <u>जातिवाचक</u> :- जो संज्ञा शब्द किसी जाति विशेष का बोध कराते हैं; जैसे -

(i) <u>नगर जाति</u> का

(ii) <u>नदियों की जाति</u> का

(iii) <u>जानवर जाति</u> का

(iv) <u>मनुष्य जाति</u> का

अत: नगर, कुर्सी, पहाड़, नदी, सभा, स्त्री आदि शब्द एक पूरी जाति का बोध कराते हैं, इसलिए ये जातिवाचक संज्ञा हैं। (यदि किसी शहर, नदी अथवा व्यक्ति का **नाम** हो तो वहाँ व्यक्तिवाचक है, जातिवाचक संज्ञा नहीं।) जातिवाचक संज्ञा को दो वर्गों में रखा जा सकता है -

(i) <u>समूहवाचक संज्ञा</u> :- जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है कि ऐसे शब्द जो किसी विशेष समूह, झुंड अथवा समुदाय का बोध कराए, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते है; जैसे - भीड़, छात्र, पुलिस, लड़के, बच्चे आदि।

(ii) <u>द्रव्यवाचक (पदार्थवाचक) संज्ञा</u> :- जिन शब्दों से किसी द्रव्य अथवा धातुओं के नाम का बोध हो, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते है; जैसे - सोना, चाँदी, पीतल, दाल, चावल, पानी, तेल आदि।

3. <u>भाववाचक संज्ञा</u> :- किसी भी प्रकार के भाव, गुण अथवा क्रिया के नाम को भाववाचक संज्ञा कहते है; जैसे - ईमानदारी, पाण्डित्य, कोमल, कठोर, मीठा, दु:खी, खुश आदि।

<u>भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण</u> :- भाववाचक संज्ञा के शब्दों का निर्माण निम्नलिखित तत्वों से होता है -

1. जातिवाचक संज्ञाओं से

2. सर्वनाम से

3. विशेषण से

4. क्रिया से

1. <u>जातिवाचक संज्ञाओं से भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण</u> -

1.	गरीब	=	गरीबी
2.	धन	=	धनी
3.	बुद्धि	=	बुद्धिमान
4.	मूर्ख	=	मूर्खता

5.	पशु	=	पशुता
6.	बचपन	=	बचपना
7.	बूढ़ा	=	बुढ़ापा

2. <u>सर्वनाम शब्दों से भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण</u> -

1.	मम	=	ममता
2.	स्व	=	स्वयं
3.	सर्व	=	सर्वथा
4.	अपना	=	अपनापन
5.	प्रधान	=	प्रधानता
6.	मुख्य	=	मुख्यता

3. <u>विशेषण शब्दों से भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण</u> -

1.	कोमल	=	कोमलता

2.	कठोर	=	कठोरता
3.	अच्छा	=	अच्छाई
4.	बुरा	=	बुराई
5.	ऊँचा	=	ऊचाई
6.	नीचा	=	नीचता
7.	मोटा	=	मोटापा
8.	चिकना	=	चिकनाहट
9.	साफ़	=	सफ़ाई
10.	गंदा	=	गंदगी
11.	निंदा	=	निंदनीय
12.	प्रशंसा	=	प्रशंसनीय

4. <u>क्रिया शब्दों से भाववाचक शब्दों का निर्माण</u> -

1.	लिखना	=	लिखावट
2.	पीटना	=	पीट
3.	रोना	=	रुलाई
4.	हँसना	=	हँसाई
5.	मुस्कुराना	=	मुस्कुराहट
6.	जीतना	=	जीत
7.	हारना	=	हार
8.	पढ़ना	=	पढ़ाई
9.	गुनगुनाना	=	गुनगुनाहट
10.	बुनना	=	बुनाई

विकारी और अविकारी शब्द

हिंदी भाषा में विकार के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं -

1. विकारी शब्द :- विकारी शब्द वे शब्द होते हैं जिनका रुप परिवर्तित होता रहता है। ये परिवर्तन तीन कारणों से होता है - लिंग, वचन और कारक।

2. अविकारी शब्द :- अविकारी शब्दों में कोई परिवर्तन नहीं होता। उनका रुप हमेशा एक जैसा रहता है; जैसे -

1. राधा बहुत सुंदर चित्र बनाती है।

2. रोहन बहुत सुंदर चित्र बनाता है।

3. दोनों बहुत सुंदर चित्र बनाते हैं।

यहाँ 'बहुत सुंदर' शब्द क्रिया विशेषण है जिनमें लिंग के बदलने के बाद भी कोई परिवर्तन नहीं आया है, अत: ये अविकारी शब्द हैं।

संज्ञा के विकारक तत्व – लिंग

संज्ञा के तीन विकारक तत्व हैं -

1. लिंग

2. वचन

3. कारक

संज्ञा की ही तरह सर्वनाम के भी विकारी शब्द होते हैं और लिंग, वचन, कारक के आधार पर इनके रुप में भी परिवर्तन आता है।

1. लिंग :- लिंग का अर्थ चिह्न या पहचान है। शब्द के जिस रुप से यह पता चले कि यह शब्द स्त्री जाति का हैं या पुरुष जाति का, उसे लिंग कहते हैं। हिंदी में सिर्फ़ दो ही लिंग होते हैं।

(i) पुल्लिंग :- पुरुष जाति के लिए प्रयुक्त शब्द पुल्लिंग कहे जाते हैं; जैसे - निर्मल, बैल, जाता है आदि।

(ii) स्त्रीलिंग :- स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द स्त्रीलिंग शब्द कहे जाते हैं; जैसे - सीता, गाय, मछली, माता, दौड़ती आदि।

लिंग की पहचान:- संसार में दो तरह के पदार्थ है -

सजीव तथा निर्जीव।

(1) सजीव दो प्रकार के हैं -

(i) पुरुष को बताने वाले शब्द – पुल्लिंग

(ii) स्त्री को बताने वाले शब्द – स्त्रीलिंग

पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**
पुरुष	स्त्री
नौकर	नौकरानी
पुत्र	पुत्री
पिता	माता
दास	दासी
सेवक	सेविका
बालक	बालिका
बूढ़ा	बूढ़ी
घोड़ा	घोड़ी

शेर	शेरनी
बंदर	बंदरिया
चूहा	चूहिया
कवि	कवयित्री
छात्र	छात्रा
छोटा	छोटी
बड़ा	बड़ी
बेटा	बेटी
मुन्ना	मुन्नी
राजा	रानी
माता	पिता

नाग	नागिन

2. निर्जीव वस्तुओं का लिंग निर्धारण :-

निर्जीव वस्तुओं के लिंग का निर्धारण भाषिक परम्परा अथवा व्याकरण की दृष्टि से किया जाता है; जैसे -

(i) पुस्तक टेबल पर रखी है – यहाँ **पुस्तक** स्त्रीलिंग है, इसीलिए इसके लिए **रखी है** शब्द का प्रयोग किया गया है।

(ii) अलमारी टूट गई – **अलमारी** स्त्रीलिंग है, इसलिए यहाँ **गई** का प्रयोग किया गया है।

(iii) कैलेण्डर पुरानी है – यहाँ **कैलेण्डर** स्त्रीलिंग है, इसलिए यहाँ **पुरानी** शब्द का प्रयोग किया गया है।

• वाक्य में क्रिया का रुप भी लिंग और वचन के अनुसार बदलता है।

	पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**
1	सोमनाथ जा रहा है	शैली जा रही है।
2	राम लिखता है।	सीता लिखती है।
3	नमन रो रहा है।	नीलू रो रही है।
4	सौरभ खाता है।	नीता खाती है।
5	शेर दहाड़ रहा है	शेरनी दहाड़ रही है।

6	मोर नाचता है।	मोरनी नाचती है।
7	मेंढ़क आवाज़ कर रहा है।	मेंढ़की आवाज़ कर रही है।
8	शेर भूखा है।	शेरनी भूखी है।

• आ, आव, पा, पन ये प्रत्यय जिन शब्दों के अंत में हो वे प्राय: पुल्लिंग होते हैं; जैसे - मोटा, मोटापा, बुढ़ापा, बचपन, लड़कपन, आदि।

• पर्वत, महीनों, दिन और कुछ ग्रहों के नाम पुल्लिंग होते हैं; जैसे - विंध्याचल, हिमाचल, जनवरी, फरवरी, सूर्य, चंद्र, मंगल, गुरु आदि।

• पेड़ों के नाम पुल्लिंग होते हैं; जैसे - आम, बबूल, नीम, पीपल, बरगद आदि।

• तारीख, तिथि, नक्षत्रों के नाम तथा पृथ्वी ग्रह स्त्रीलिंग है।

संज्ञा के विकारक तत्व – वचन

शब्द के जिस रुप से उसके एक या अनेक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं। हिंदी में वचन दो होते हैं - 1. एकवचन 2. बहुवचन

1. एकवचन :- शब्द के जिस रुप से एक ही वस्तु के होने का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे - लड़का, भैंस, गाय, बच्चा, मोर, टोपी, स्त्री, पुरूष, पुस्तक, माला आदि।

2. बहुवचन :- शब्द के जिस रुप से अनेकता का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे - लड़कें, भैसें, गायें, बच्चे, कपड़ें, मालाएँ, पुस्तकें, स्त्रियाँ आदि।

(क) स्त्रीलिंग शब्दों में 'अ' को 'एँ' कर देने से शब्द बहुवचन में बदल जाते हैं; उदाहरण -

एकवचन	**बहुवचन**

आँख	आँखें
बहन	बहनें
बात	बातें
सड़क	सड़कें
गाय	गायें
किताब	किताबें
पुस्तक	पुस्तकें
रात	रातें
कलम	कलमें

(ख) पुल्लिंग के शब्दों के अंत में 'आ' को 'ए' कर देने से भी शब्द बहुवचन में बदल जाते हैं -

एकवचन	**बहुवचन**

घोड़ा	घोड़े
बेटा	बेटे
लड़का	लड़के
कौआ	कौए
गधा	गधे
कुत्ता	कुत्ते
केला	केले
मेला	मेले
ऐसा	ऐसे
वैसा	वैसे
छिलका	छिलके

कपड़ा	कपड़े
कुर्ता	कुर्ते
रिश्ता	रिश्ते
नाता	नाते
नाला	नाले
सोना	सोने
डिब्बा	डिब्बे

(ग) स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'आ' को 'एँ' कर देने से भी शब्द बहुवचन में बदल जाते हैं; उदाहरण -

एकवचन	**बहुवचन**
रचना	रचनाएँ
कविता	कविताएँ

कला	कलाएँ
माता	माताएँ
कन्या	कन्याएँ
लता	लताएँ
लेखिका	लेखिकाएँ
भावना	भावनाएँ
सज़ा	सज़ाएँ

(घ) यदि स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'इ' अथवा 'ई' हो तो बहुवचन में 'याँ' जुड़ जाता है;

उदाहरण -

एकवचन	**बहुवचन**
रीति	रीतियाँ
नीति	नीतियाँ

बुद्धि	बुद्धियाँ
कली	कलियाँ
गति	गतियाँ
थाली	थालियाँ
बूढ़ी	बुढ़ियाँ
लड़की	लड़कियाँ
स्त्री	स्त्रियाँ

(ङ) जिन स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'या' हैं, उनके अंतिम 'आ' को 'आँ' कर देने से वे बहुवचन बन जाते हैं -

एकवचन	**बहुवचन**
गुड़िया	गुड़ियाँ
खटिया	खटियाँ

गैया	गैयाँ
बिटिया	बिटियाँ
चिड़िया	चिड़ियाँ
चुहिया	चुहियाँ
बुढ़िया	बुढ़ियाँ

(च) स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'एँ' लगाकर भी बहुवचन रुप बनता है -

एकवचन	**बहुवचन**
गौ	गौएँ
बहू	बहुएँ
धातु	धातुएँ
वस्तु	वस्तुएँ

धेनु	धेनुएँ
साधु	साधुएँ
चाकू	चाकुएँ
सेतु	सेतुएँ

(च) कुछ शब्दों में दल वृंद, वर्ग, जन, लोग, गण आदि शब्द जोड़कर भी शब्दों का बहुवचन हो जाता है -

एकवचन	**बहुवचन**
अध्यापक	अध्यापक वृंद
विद्यार्थी	विद्यार्थी गण
आप	आप लोग
तुम	तुम लोग
हम	हम लोग

गुरु	गुरु जन
सेवक	सेवक जन
सेना	सेना दल
गरीब	गरीब लोग
मित्र	मित्र वर्ग
छात्र	छात्र वर्ग
श्रोता	श्रोता गण

(छ) कुछ शब्द एक वचन तथा बहुवचन दोनों में समान होते हैं -

एकवचन	**बहुवचन**
क्षमा	क्षमा
जल	जल

वीर	वीर
राजा	राजा
पानी	पानी
प्रेम	प्रेम
घृणा	घृणा
क्रोध	क्रोध

संज्ञा के विकारक तत्व – कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रुप से उसका सीधा सम्बन्ध क्रिया के साथ ज्ञात हो, वह कारक कहलाता है; जैसे - राम स्कूल जाता है।

इस वाक्य में 'राम' कर्ता है, 'स्कूल' कर्म है तथा 'जाना' क्रिया है।

कारक के विभक्ति चिह्न (परसर्ग) -

1.	कर्ता (ने)	राहुल ने मारा।
2.	कर्म (को)	राहुल ने सोमू को मारा।
3.	करण (से, के साथ, के द्वारा)	(i) राधा ज़ोर से गाती है।
		(ii) रामू गाड़ी द्वारा बाज़ार गया।
		(iii) मानस राजन के साथ स्कूल गया है।
4.	सम्प्रदान (के लिए, को)	(i) मोनू ने राजू को सेब दिया।
		(ii) मोनू राजू के लिए सेब लाया है।
5.	अपादान (से)	(i) राहुल स्कूल से चला गया।
6.	सम्बन्ध (का, के, की)	(i) यह रमेश की गाय है।
		(ii) यह रमेश का भाई है।
7.	अधिकरण (में, पर)	(i) शोभा रसोई घर में है।
		(ii) माँ छत पर है।
8.	संबोधन (हे!, अरे!)	(i) हे प्रभु! ये क्या हो रहा है?
		(ii) अरे रामू! ऐसा क्यों कर रहे हो?

सम्बोधन कारक के चिह्न प्राय: वाक्य से पूर्व लगाए जाते हैं।

1. **कर्ता कारक** :- जिस रुप से क्रिया (कार्य) के करने वाले का बोध होता है, वह 'कर्ता' कारक कहलाता है। इसका विभक्ति- चिह्न 'ने' है। कभी-कभी कर्ता कारक के साथ परसर्ग नहीं लगता है; जैसे -

(i) सीता **ने** गीता को बुलाया।

(ii) मोर **ने**नाच दिखाया।

(iii) मैं**ने** खाना खाया।

(iv) तुम**ने** ये क्यों किया?

इसमें 'ने' कर्ता कारक का विभक्ति चिह्न है। कर्ता कारक के 'ने' परसर्ग का प्रयोग केवल भूतकाल की क्रियाओं में ही होता है।

2. **कर्म कारक** :- क्रिया के कार्य का फल जिस पर पड़ता है, वह कर्म कारक कहलाता है। इसका विभक्ति चिह्न 'को' है। यह चिह्न बहुत से स्थानों पर नहीं लगता है।

उदाहरण -

(i) सीता ने गीता **को** बुलाया।

(ii) रामू **को** पैसे दो।

यहाँ पहले वाक्य में सीता के क्रिया का फल गीता पर पड़ा है। अर्थात् 'गीता' कर्म कारक है। इसके साथ परसर्ग 'को' लगा हुआ है। दूसरे वाक्य में 'देने' (क्रिया) का फल 'पैसे' पर पड़ा। इसलिए 'पैसे' कर्म कारक है। इसमें कर्म कारक का विभक्ति चिह्न 'को' लगा हुआ है।

3. **करण कारक** :- जिसकी सहायता से कार्य संपन्न हो, वह करण कारक कहलाता है। इसका विभक्ति चिह्न 'से' तथा 'द्वारा' है।

उदाहरण -

(i) शिक्षक ने छड़ी **से** छात्र को मारा।

(ii) यह कार्य राम **द्वारा** किया गया है।

पहले वाक्य में 'छड़ी' से मारने का कार्य हुआ है, अत: यहाँ 'छड़ी से' करण कारक है तथा दूसरे वाक्य में कार्य 'राम द्वारा' किया गया है, अत: यहाँ 'द्वारा' करण कारक है।

4. **सम्प्रदान कारक** :- सम्प्रदान का अर्थ है 'देना' अर्थात् कर्ता जिसके लिए कुछ कार्य करता है अथवा जिसे कुछ देता है, उसे व्यक्त करने वाले रुप को सम्प्रदान कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिह्न 'के लिए', 'को' है;

उदाहरण -

(i) तुम रमेश **<u>को</u>** पैसे दो।

(ii) राहुल रमेश **<u>के लिए</u>** फल लेकर आया है।

यहाँ रमेश को पैसे देने का काम हो रहा है, रमेश के लिए कार्य किया जा रहा है। इन दोनों वाक्यों में 'को' और 'के लिए' सम्प्रदान कारक है।

5. **अपादान कारक** :- संज्ञा के जिस रुप में एक वस्तु दूसरी से अलग हो, वह अपादान कारक कहलाता है। इसका विभक्ति चिह्न - 'से' है;

उदाहरण -

(i) नीता घोड़े **<u>से</u>** गिर पड़ी।

(ii) राहुल रमेश **<u>से</u>** अधिक बड़ा है।

यहाँ नीता घोड़े '**से**' गिर कर अलग हो गई, राहुल रमेश '**से**' बड़ा है (अलग है)। इन दोनों वाक्यों में '<u>से</u>', से अलग होने का बोध होता है, इसलिए ये अपादान कारक के उदाहरण हैं। (करण कारक में 'से' साधन के रुप में आता है।)

6.**सम्बन्ध कारक** :- शब्द के जिस रुप से किसी एक वस्तु का दूसरी वस्तु से सम्बन्ध प्रकट हो, वह सम्बन्ध कारक कहलाता है। इसका विभक्ति चिह्न का, के, की, रा, रे, री, है;

उदाहरण -

(1) यहाँ रमेश **<u>का</u>** घर है।

(2) यह पुस्तक **<u>का</u>** पृष्ठ है।

(3) यह रमेश **<u>की</u>** बहन है।

(4) वह शोभा **<u>की</u>** कमीज़ है।

(5) यह कपड़ा मे**<u>रा</u>** है। (मे + रा)

(6) यह कुर्ता मे**रा** है। (मे + रा)

(7) यह कमीज़ मे**री** है। (मे + री)

(8) यह पेंसिल मे**री** है। (मे + री)

(9) यह फूल तुम्हा**रे**हैं। (तुम्हा + रे)

(10) यह फल मे**रे** हैं। (मे + रे)

7. **अधिकरण कारक** :- शब्द के जिस रुप से क्रिया के स्थान, समय तथा आधार का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इसका विभक्ति-चिह्न 'में', 'पर' है;

उदाहरण -

(i) राहुल स्कूल **में** पढ़ता है।

(ii) पुस्तक टी.वी. **पर** है।
यहाँ 'में' तथा 'पर' से स्थान (स्कूल) का बोध हो रहा है, 'पर' से टी.वी. आधार का बोध हो रहा है, अत: यहाँ अधिकरण कारक है।

8. **संबोधन कारक** :- जिससे किसी को बुलाने अथवा सचेत करने का भाव प्रकट हो, उसे संबोधन कारक कहते हैं। इसमें संबोधन चिह्न '! ' लगाया जाता है; जैसे - अरे भैया! आदि।

उदाहरण -

(i) **छी: छी!** वह कितना दुष्ट है।

(ii) **अरे बेटा!** ज़रा यहाँ आओ।